IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अरविन्द घोष जी के शैक्षिक विचारों का वर्तमान शिक्षा में योगदान का अध्ययन

पवनदीप कौर
शोधकर्त्री (एम.एड.)
कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय
कुरूक्षेत्र।

डा० ज्योति खजूरिया
असिस्टैन्ट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय
कुरूक्षेत्र।

डा० मीना रानी
शोधकर्त्री
कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय
कुरूक्षेत्र।

सारांश

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य अरविन्द घोष जी के शैक्षिक विचारों का वर्तमान शिक्षा में योगदान का अध्ययन करना है। अरविन्द घोष जी एक महान दार्शनिक, शिक्षाशास्त्री थे। आज से वर्षों पहले दिए गए उनके शिक्षा पर विचार आज के समय में शिक्षा पर काफी प्रभावी प्रतीत होते है। प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति दार्शनिक है। इसका मुख्य आधार शैक्षिक विचार तथा साहित्य है। शोध कार्य में तथ्यों का सग्रंह प्राथमिक और द्वितीयस्त्रोतों (प्रमाणित साहित्य) के माध्यम से किया गया है।

श्री अरविन्द जी के बहुत से विचार आज वर्तमान शिक्षा प्रणाली के अनुरूप है उनके विचारों के माध्यम से शिक्षा को सुदृढ़ बनाया जा सकता है और बच्चों को भविष्य के लिए तैयार किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध में आज की शिक्षा प्रणाली को और बेहतर बनाने के लिए श्री अरविन्द जी की शिक्षा दर्यन की आवश्यकता का अध्ययन किया गया है।

मुख्य बिन्दुः– शिक्षा दर्शन, जीवन दर्शन

प्रस्तावना

व्यक्ति अपने जीवन दर्शन से दूसरे व्यक्तियों को प्रभावित करता है। स्वामी विवेकानन्द के समान ही अरविन्द घोष व गांधी जी ने अपने जीवन दर्शन व शैक्षिक विचारों को व्यक्ति के जीवन से दर्शाया है। अरविन्द घोष का शिक्षा दर्शन उनके जीवन दर्शन के अनुरूप है। वे एक महान दार्शनिक होने के साथ ही साथ एक महान शिक्षाशास्त्री भी थे। वे शिक्षा को उन्नति और विकास के लिए आवश्यक मानते थे। अरविन्द घोष जी का मानना था कि शिक्षासिर्फ सूचनाओं

का एकत्रीकरण नहीं है, सूचनाएं ज्ञान की नींव नहीं हो सकती है। वह कहते है कि सच्ची एवं जीवित शिक्षा केवल वह नहीं है जिसके द्वारा बच्चे की छिपी हुई शक्तियों का विकास होता है और उसे जीवन, मस्तिष्क, राष्ट्रकी आत्मा एवं मानवता की आत्मा और मस्तिष्क से उचित सम्बन्ध जोडने में सहायक होता है। अरविन्द जी का शिक्षा दर्शन लक्ष्य की दृष्टि से आर्दशवादी, क्रिया की दृष्टि से प्रयोजनवादी तथा महत्वाकंशा की दृष्टि से मानवतावादी है। श्री अरविन्द घोष जी पर किए गए शोध में बताया गया कि इन्होने शिक्षा के सभी उद्देश्य जैसे शारीरिक विकास, ज्ञानेन्द्रिय विकास, मानसिक विकास, नैतिक विकास और अध्यात्मिक विकास सभी का आज की शिक्षा प्रणाली में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान बताया है। रॉय (2018)ने अपने शोध द्वारा बताया कि अरविन्द घोड्ढ जी का शैक्षिक दर्शन आर्दशवाद की श्रेणी में ही आता है। यादव (2018) ने ''श्री अरविन्द घोष की शिक्षा दर्शनः एक सामाजिक कार्य परिप्रेक्ष्य'' में दर्शाया है कि अरविन्द घोष जी का शैक्षिक दर्शन मानता है कि बच्चे में बढ़ने की पूरी क्षमता है । मोहन लाल (2018) ने अपने शोध में बताया कि शिक्षा वास्तविक जीवन की आवश्यकताओं के अनुसार होनी चाहिए। शारीरिक विकास के लिए शारीरिक शुद्वि होना जरूरी है तभी अध्यात्मिक विकास संभव है। आज वर्षो बाद उनकी शिक्षा का प्रभाव वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

हम कह सकते है कि उनके द्वारा बहुत समय पहले सुझाए गए शिक्षा के उद्देश्य, आज की शिक्षा प्रणाली में विशेषरूप शामिल होने चाहिए। जिन्हे देखते हुए हम कह सकते है उनकी भविष्य के प्रति सोच बहुत की सटीक और सही थी।आज के युग में हमारी शिक्षा प्रणाली की सैद्वांतिक गिरावट को दूर करने के लिए इस महान चिन्तक द्वारा दिए शिक्षा के मूल्यों को अपनाने की बहुत आवश्यकता है।

समस्या कथन

अरविन्द घोष जी के शैक्षिक विचारों का वर्तमान शिक्षा मे योगदान का अध्ययन

अध्ययन के उद्देश्य

- अरविन्द घोष जी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना ।
- अरविन्द घोष जी के शैक्षिक विचारों का वर्तमान शिक्षा में योगदान का अध्ययन करना ।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध में प्राथमिक और द्वितीय स्त्रोत का उपयोग किया गया है ।

अध्ययन की परिसीमाएं

प्रस्तुत शोध में अरविन्द घोष जी के केवल शैक्षिक दर्शन का ही अध्ययन किया गया है । प्रस्तुत शोध में प्राथमिक और द्वितीय स्त्रोत साहित्य का उपयोग किया गया है ।

श्री अरविन्द शैक्षिक दर्शन

श्री अरविन्द जी की यह धारणा थी कि जीव की आत्मा में ज्ञान सदा सुषुपतावस्था में गुप्त रहता है ।शिक्षा का आधार अन्तःकरण है, जिसके चार पटल बताए गए है तथा उनके प्रशिक्षण और विकास पर बल दिया गया है। अन्तःकरण का प्रथम पटल चित्त है, जो अन्य तीनों पटलों का आधार है। जब भी हम कुछ याद करते है तो वह हमारे चित्त में एकत्र हो जाती है। अन्तःकरण का द्वितीय पटल मनस है, जिसमें अन्य पटल एकत्र होते है और इसे दर्शन की भाषा में मस्तिष्क कहा जाता है । अन्तःकरण का तृतीय पटल बुद्धि है, मस्तिष्क जिस ज्ञान को प्राप्त करता है उसे व्यवस्थित करने का वास्तविक यन्त्र बुद्धि है। इसमें रचनात्मक, विषलेषणात्मक, संशलेषणात्मक एवं आलोचनात्मक शक्तियॉ निहित है । अन्तःकरण का चतर्थ पटल सत्य के अन्तः दृष्टि परख प्रत्यक्षीकरण की शक्ति है । इसमें ज्ञान का प्रत्यक्ष दर्शन होता है।

अरविन्द घोष जी अनुसार शिक्षा के उद्देश्य

अरविन्द घोष जी के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य निम्नलिखित है:–

1. शारीरिक विकास और शुद्वि

अरविन्द घोष जी ने शिक्षा प्रमुख उद्देश्य शरीर का पूर्ण विकास और शुद्वि है । उन्होने शारीरिक विकास पर जोर ही नही दिया अपितु शारीरिक वृद्वि को भी सम्मलित किया है ।

2. ज्ञानेन्द्रियों का प्रशिक्षण

अरविन्द घोष जी के शिक्षा का दूसरा उद्देश्य ज्ञानेन्द्रियों का प्रशिक्षण बताया है उनका विश्वास था कि दृष्टि, श्रवण, ध्राण, स्पर्श एवं स्वाद पांचों ज्ञानेन्द्रियों का विकास तभी हो सकता है। जब 1) स्नायु 2) चित्त तथा 3) मनस् शुद्व हो। उनके अनुसार शिक्षक का पहला कर्तव्य यह है कि वह बालक में छह ज्ञानेन्द्रियों के उचित प्रयोगों का उचित विकास करें ।

3. मानसिक शक्तियों का प्रशिक्षण

अरविन्द घोष जी ने बालक की मानसिक शक्तियों के प्रशिक्षण पर भी बल दिया। उन्होनें बताया कि बालक की मानसिक शक्तियों को उसकी अभिरूचि अनुसार प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। यदि बालक को मानसिक शक्तियों का प्रशिक्षण पूर्णरूप से भली–भांति हो जाएगा तो उसके ज्ञान में वृद्वि होगी जोकि वर्तमान शिक्षा प्रणाली के लिए अनिवार्य है।

4. तार्किक शक्तियों का प्रशिक्षण

मानसिक शक्तियों की प्रशिक्षण के पश्चात् अरविन्द घोष जी ने तार्किक शक्तियों के प्रशिक्षण को शिक्षा उद्देश्य माना है उन्होनें तर्क के लिए तीन बातें आवश्यक बतलायी हैः– 1) तथ्य सही हो 2) संग्रह की हुई सामग्री पूर्ण तथा निश्चित हो तथा 3) तथ्य से निकलने वाले निष्कर्षों को अलग करना।

5. नैतिक विकास

अरविन्द घोष जी ने नैतिकता के विकास को भी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य माना है। उन्होने मानव के नैतिक विकास के लिए तीन बातें मुख्य मानी है। 1) संवेग 2) संस्कार या आदत 3) स्वभाव या प्रकृति। ये इन तीनों बातों को शिक्षा के द्वारा शुद्व एवं सुन्दर बनाकर मानव के हृदय को प्रशिक्षित करना चाहते थे।

6. अध्यात्मिक विकास

अरविन्द घोष जी ने बताया है कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति का अध्यात्मिक विकास करना है। उनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में कुछ दैविय क्षमताएं होती है। शिक्षा के द्वारा बालक के दैविय अंश को पूर्णता की ओर अग्रसर किया जा सकता है। उन्होने कहा है– प्रत्येक व्यक्ति में कुछ किया जा सकता है। उन्होने कहा है–प्रत्येक व्यक्ति में कुछ अंश होता है कुछ अपना स्वयं का होता है जिसको पूर्ण एवं सशक्त बनाया जा सकता है ।

अरविन्द घोष जी द्वारा प्रस्तुत पाठ्यक्रम

भौतिक विषयः मातृभाषा एवं राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की भाषाएं, इतिहास, भूगोल, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, गणित विज्ञान, मनोविज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान, भू–गर्भ विज्ञान, कृषि उद्योग, वाणिज्य और कला। भौतिक क्रियाएँः खेल–कूद, व्यायाम, उत्पादन कार्य और शिल्प।अध्यात्मिक विषयः वेद, उपनिष्द, गीता, धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, देशों के धर्म एवं दर्शन। अध्यात्मिक क्रियाएंः भजन, कीर्तन, ध्यान एवं योग आदि विषय पाठ्क्रम में पूर्णरूप से सम्मलित होना चाहिए

प्राथमिक स्तर

मातृभाषा, अंग्रेजी, फ्रेंच साहित्य, गणित, सामाजिक अध्ययन एवं चित्रकला और खेल कूद, व्यायाम, बागवानी, भजन व कीर्तन आदि को प्राथमिक स्तर पर महत्वपूर्ण मानते थे जोकि वर्तमान शिक्षा प्रणाली के लिए बहुत ही आवश्यक है।

माध्यमिक स्तर

मातृभाषा, अंग्रेजी, फ्रैंच साहित्य, गणित, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान भूगर्भ विज्ञान, सामाजिक अध्ययन एवं चित्रकला और खेलकूद, व्यायाम बागवानी, कृषि अन्य शिल्प भजन कीर्तन ध्यान व योग।

उच्च स्तर

अंग्रेजी साहित्य, फ्रैंच साहित्य, गणित, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, विज्ञान का इतिहास, सभ्यता का इतिहास, जीवन का विज्ञान, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, भारतीय व पाश्चात्य दर्शन, अंर्तराष्ट्रीय सम्बन्ध एवं विश्व एकीकरण, कृषि, अन्य शिल्प एवं भजन, कीर्तन ध्यान व योग।

श्री अरविन्द विषय को रटने पर विशेष बल नहीं देते थे उनके अनुसार विद्यार्थी को करके सीखना चाहिए उनके शिक्षण विधियों में मौलिकता थी। वे मातृभाषा से शिक्षण पर बल देते थे। उनको बालकों को क्रिया द्वारा सीखने के अवसर देना इस बात का सबूत है किवे बच्चों में काम करने की लगन पैदा करना चाहते थे। वे ऐसे अध्यापक चाहते थे जो बच्चों के सहायक और पथ प्रदर्शक हो। उनके अनुसार मातृभाषा से शिक्षण पर बल देने से बच्चों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान मिलेगा जिससे वह उचित प्रकार से विकसित होगें और भविष्य के लिए तैयार होगें। बच्चे अपनी रोजी–रोटीकमाकर अच्छे से जीवन यापन कर पाएगें व चाहते थे कि विद्यालय इस प्रकार के हो कि बच्चे उन्हे अपने भावी जीवन की तैयारी के रूप में स्वीकार करें और उन्हें भविष्य में कठिनाईयों का ज्यादा सामना ना करना पडे। बालक के सर्वांगीण विकास में विद्यालय की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका है । अतः विद्यालय में इस प्रकार का वातावरण उतपन्न कराना चाहिए, जो बालक को पढ़ने के लिए प्रेरित कर सके।

शिक्षा के अन्य पक्ष

नारी शिक्षा व समाज शिक्षा तथा चरित्र निर्माण जोकि आज के युग के अनुसार बहुत जरूरी है, उनके अनुसार नारी शिक्षा व समाज शिक्षा के बिना कोई भी देश तरक्की नहीं कर सकता। इसे बढाने में इनका बहुत बडा योगदान है। इन्होने राष्ट्रीय शिक्षा की पूरी रूप–रेखा तैयार की। इनके अनुसार राष्ट्रीय शिक्षा वह है जो राष्ट्र के नियन्त्रण राष्ट्रीय लोगों को राष्ट्रीय प्रद्वति से दी जाती है। नैतिकता और धर्म में अरविन्द जी की आस्था थी। इसलिए वे शिक्षा को नैतिकता और धर्मपर आधारित करना चाहते थे। इनका स्पष्ट मत था कि धर्म के अभाव में मनुष्य अपने अध्यात्मिक स्वरूप को नहीं पहचान सकता।

अरविन्द जी ने देश में व्यवसायिक शिक्षा को बढ़ावा देने की बात कही। बहुत सी त्रुटियां जो आज की शिक्षा में है, इन्हे दूर करने का प्रयास अरविन्द जी के विचारों से किया जा सकता है।

निष्कर्ष

अरविन्द घोष जी एक बहुत ही अच्छे दार्शनिक थे जो राष्ट्रीय शिक्षा देना चाहते थे और देश को विकसित करने में अपना योगदान आज भी दे रहे है। श्री अरविन्द का शिक्षा दर्शनकेवल भारतीय सीमा तक सीमित नहीं है। पांडिचेरी अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा केन्द्र की शाखाएं देश विदेश में प्रचलित है। इस प्रकार हम कह सकते है कि आज की शिक्षा प्रणाली जोकि अपने उद्देश्यों से भटक गई है। इसे अरविन्द जी द्वारा बताए गए शिक्षा के उद्देश्य सही मार्ग पर ला सकते है, जो कि व्यक्ति के विकास के लिए बहुत ही आवश्यक है।

संदर्भ ग्रथं सूचि

श्री अरविन्द, (1994). मानव चक्र पाण्डिचेरी: श्री अरविन्द आश्रम ।

श्री अरविन्द. (1994). श्री अरविन्द अपने विषयों में, पाण्डिचेरी श्री अरविन्द आश्रम।

रविन्द्र. (1994). लातकमल. पाण्डिचेरी: श्री अरविन्द सोसाइटी।

नवजात (2001). दिव्य शरीर में दिव्य जीवन. पाण्डिचेरी: श्री अरविन्द सोसाइटी।

यागी सुरेश चन्द्र. (2002). अदिति अर्ध वार्षिक प्रस्तुति, मेरठः श्री अरविन्द सोसाइटी, प्रादेशिक समिति।

छोटे नारायण शर्मा, (2002). श्री अरविन्द (सक्षिप्त जीवनी), नई दिल्ली: श्री नवीन बाहरी, दि मदर्स फर्म ।

कोकिला विद्यावती, (2003) श्री अरविन्द आयाम, पाण्डिचेरी: श्री अरविन्द आश्रम प्रेम ।

मैत्रा, एस.के. (2004). श्री अरविन्द दर्शन की भूमिका, पाण्डिचेरी: श्री मीरा ट्रस्ट ।